गौतम बुद्ध महाविद्यालय

सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पचपेड़वा, सांगठ, संतकबीर नगर (उ.प्र.)

(शिक्षा संकाय)

क्रियात्मक अनुसंधान

सत्र : 20.24..-20...25

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम पूजा सिंह

शिक्षण विषय क्रियात्मक अनुसंधान

महाविद्यालय अनुक्रमांक

क्रियात्मक अनुसंधान

(Action Research)

शिक्षा के क्षेत्र में बहुत समय से मौलिक कार्य किये जा रहे हैं, यद्यपि की अनुसंधान साधारणतः शोध ग्रंथो की सामग्री है फिर भी इन्हें नवीन शिक्षण विधियों, धारणाओं आदि द्वारा प्रतिपादित करके शिक्षा के सिद्धांत पक्ष को सबल और समृद्ध बनाने में सराहनीय योगदान दिया। सिद्धांत पक्ष से महत्वपूर्ण है क्रिया एवं व्यवहार पक्ष, विद्यालय के शिक्षण विधियों में किस प्रकार का सुधार किया गया और उसमें संगठन एवं संचालन को किस प्रकार उत्तम बनाया गया, उसके वास्तविक एवं व्यवहारिक सब प्रकार के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनुसंधान को एक नई दिशा दी गयी जिसे क्रियात्मक अनुसंधान कहते हैं।

अर्थ एवं परिभाषा :- क्रियात्मक अनुसंधान का सामान्य अर्थ है कि विद्यालय से सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा अपनी और विद्यालय की समस्याओं का अध्ययन करके अपनी क्रियाओं एवं विद्यालय की गतिविधियों में सुधार करना, जैसे निरीक्षक अपने प्रशासन में, प्रधानाचार्य अपने

विद्यालय के संचालन में, अध्यापक अपने शिक्षण सुधार में करने को क्रियात्मक अनुसंधान कहते हैं।

परिभाषा :-

1. क्रियात्मक अनुसंधान वह अनुसंधान है जो एक व्यक्ति को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है।
(Research in Education)

2. शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया जाने वाला अनुसंधान है ताकि वह अपने कार्यों में सुधार कर सके। (Corey)

3. क्रियात्मक अनुसंधान निरीक्षकों, शिक्षकों, प्रशासकों द्वारा अपने निर्णय एवं कार्यों की गुणात्मक उन्नति के लिए प्रयोग किया जाने वाला अनुसंधान है।

क्रियात्मक अनुसंधान के विषय क्षेत्र में आने वाली समस्याएँ :-

1. बाल व्यवहार से सम्बन्धित समस्याएँ
2. शिक्षण एवं परीक्षा से सम्बन्धित समस्याएँ
3. पाठ्यान्तर क्रियाओं से सम्बन्धित समस्याएँ
4. विद्यालय संगठन एवं प्रशासन सम्बन्धित समस्याएँ

विषय दर्पण

1. प्रस्तावना (समस्या)
2. अनुसंधान की समस्या एवं सीमाएं।
3. प्रदत्तों का संकलन एवं विश्लेषण
4. परिणामों की व्याख्या एवं निष्कर्ष
5. परिकल्पना का पुनः सत्यापन
6. संदर्भ ग्रंथों की सूची
7. प्राप्त आकड़ों के स्त्रोत

प्रस्तावना :- अनुसंधान शब्द का शाब्दिक अर्थ पुनः खोज या अन्वेषण करना to go around अर्थात सभी दिशाओं की खोज करना। अनुसंधान मनुष्य के मस्तिष्क में क्या? क्यो? कैसे? कब? जैसे प्रश्नो के उत्तर प्राप्त करने के प्रयास है, जिसमें वैज्ञानिकता तथा चिंतनशीलता होती है।

रेडमैन और कोरी के शब्दो में —
"अनुसंधान नवीन ज्ञान प्राप्त करने का एक प्रयास है।"

पी० एम० कुक के अनुसार —
"अनुसंधान किसी समस्या के प्रति ईमानदारी तथा समझदारी के साथ हुयी खोज है। यह खोज तथ्यो एवं उनके

अर्थों का पता लगाने के लिए की जाती है।"

क्रियात्मक अनुसंधान जैसा की इसके नाम से स्वतः ही स्पष्ट है, ऐसा अनुसंधान जो सैद्धांन्तिक पक्ष से सम्बन्धित होकर क्रियात्मक पक्ष से अधिकतम सम्बन्धित होते है, यदि शिक्षक को: अपनी कक्षा में उद्देश्य की प्राप्ति आने वाली घटनाओं समस्याओं का समाधान न हो तो शिक्षण हेतु शिक्षक की व्यवस्थित वयूह रचना व्यर्थ हो जाती है। अतएव शिक्षण के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का समाधान ही क्रियात्मक अनुसंधान है।

गुड के शब्दो में — "क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षको निरीक्षको एंव प्रशासको द्वारा अपने शब्दो कार्यो एंव निर्णय की गुणात्मक उन्नति के लिए प्रयोग किये जाने वाला अनुसंधान है।"

क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षक प्रधानाचार्य, प्रबन्धक, प्रशासक, निर्देशक, निरीक्षक, अथवा अन्य विद्यालय के कर्मचारियों द्वारा विद्यालयों की समस्याएँ हेतु किया जाता है। जिसका लक्ष्य विद्यालय की प्रगति तथा विकास करना होता है। यह कक्षा, विद्यालयो में प्रतिदिन उठने वाली समस्याओ का

समाधान है। यह शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति लाने तथा तीव्र विकास करने का प्रयास है। जिसमें समस्या का हल शीघ्र ही प्राप्त होता है।

"क्रियात्मक अनुसंधान कक्षा की समस्याओं को सुलझाने की एक विशाल पद्धति है। इसका उद्देश्य न तो उपाधि प्राप्त करना है और न ही शोध प्रबन्ध लिखना है। मूल अनुसंधान की भांति क्रियात्मक अनुसंधान वह अनुसंधान है जिसमें की अनसन्धित्सु प्रतिदिन होने वाली समस्याओं की उत्तरों की खोज करता है।"

एम० एस० कोरी के अनुसार :- "क्रियात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके अन्वेषक अपनी समस्याओं को निर्देशित करने के लिए तथा उसके निर्णय और कार्यों का मूल्यांकन करने के लिए वैज्ञानिक अध्ययन करते है।"

क्रियात्मक अनुसन्धान का इतिहास :-

क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रथम झलक हमे वकिंघन द्वारा रचित 'रिसर्च फार टीचर्स' नामक पुस्तक में मिलती है। उसमें अध्यापको के कक्षागत समस्याओं के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

क्रियात्मक अनुसंधान का सर्वप्रथम प्रयोग 'फालियर' महोदय ने द्वितीय विश्व युद्ध के समय किया था लेकिन महोदया तथा उनके शिष्यों ने सामाजिक सम्बन्धों को अच्छा बनाने के लिए अनुसंधान किया। इन अनुसंधानों को आधुनिक क्रियात्मक अनुसंधान के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

उसके बाद कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के टीचर्स कॉलेज से सम्बन्धित 'होरेंस मान लिंकन' इन्सटीट्यूट ऑफ एक्सपेरीमेन्ट थे। श्री स्टीफन एम कोरे के नेतृत्व में कुछ क्रियात्मक अनुसंधान हुए।

क्रियात्मक अनुसंधान का विकास प्रजातंत्रात्मक शासन पद्धति के देन है। जनतांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए विद्यालयों की कार्य पद्धति में सुधार अपेक्षित है। क्रियात्मक अनुसंधान मौलिक अनुसंधान की की अपेक्षा अधिक मनोवैज्ञानिक है।

शिक्षा एवं क्रियात्मक अनुसंधान :-

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली सतत प्रक्रिया है। परन्तु जब हम यह शिक्षा के क्षेत्र में सविचार प्रक्रिया के रूप में चलाई जाती है तब इसका समय निश्चित होता है और उस समय सरकार, अभिभावक, प्रबन्धक,

प्रधानाचार्य तथा अध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा अपना सुधार करे। शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान की गतिविधियां सुधारने तथा उन्हें नयी दिशा प्रदान करने के लिए क्रांतिकारी कदम है।

हमारे विद्यालयों के अध्यापक प्रधानाचार्य, निरीक्षक तथा प्रबन्धक वर्ग एकजुट होकर एक प्रणाली का प्रयोग कर सकते है। और इस प्रकार प्रजातंत्र के प्रति अमूल्य भूमिका निभा सकते है। भारतीय विद्यालयों में क्रियात्मक अनुसंधान की युक्ति का अनुसरण देश की भावी विकास एवं प्रगति का मंगलमय प्रतीक बन सकेगा।

क्रियात्मक अनुसंधान की योजना :- क्रियात्मक अनुसंधान की योजना बनाते समय निम्न रूप रेखा सहायक हो सकती है।

1. समस्या की व्याख्या
2. सम्भावित कारण
3. क्रियात्मक परिकल्पना
4. अनुसंधान अभिकल्प
5. मूल्यांकन

क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य :-

आजकल हमारे विद्यालय की पद्धति — एवं जर्जर हो गयी है। विद्यालय की विभिन्न प्रकार की समस्याएं शिक्षा की प्रगति में बाधक बनी हुई है। हमारे विद्यालयो की कार्यविधि में सुधार लाने के लिए प्रजातंत्रिक आदर्शो की रक्षा के लिए वैज्ञानिक आविष्कारो की उत्पन्न नई समस्याओं के समाधान हेतु, विद्यालय की प्रगतिशीलता के क्रियात्मक अनुसंधान एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी प्रक्रिया है।

संक्षेप में इसके उद्देश्य निम्नलिखित है —

1. विद्यालय की व्यवस्था में सुधार लाना।
2. शिक्षक और छात्रो में प्रजातांत्रिक गुणो का विकास करना।
3. विद्यालय के कार्यकताओं में कार्य कौशल का विकास करना।
4. शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रबन्धक तथा निरीक्षक के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
5. इसमे छात्रों के निष्पादन स्तरो तथा आकांक्षाओं -स्तरो में वृद्धि करना।
6. शिक्षको को ईमानदार तथा प्रभावशाली बनाती है।
7. छात्रो की योग्यता एवं उपलब्धि में वृद्धि होती है।
8. इसका उद्देश्य त्रुटिपूर्ण तरीको को त्यागना

होता है।

क्रियात्मक अनुसंधान के सोपान :-

क्रियात्मक अनुसंधान के सोपान निम्नलिखित हैं।

1. समस्या की पहचान :- शिक्षकों को संवेदनशील होना पड़ता है। क्योंकि जिज्ञासु शिक्षक ही समस्या की पहचान कर सकता है। समस्या नवीन हो, आकड़ो की सुविधि उपलब्ध हो तथा मितव्ययी हो, इसमें समस्या को भली-भांति समझना होता है। क्योंकि समस्या जितनी स्पष्ट होगी और उद्देश्य प्राप्ति आसान हो जाएगी।

2. समस्या का परिभाषीकरण एवं सीमांकन :- समस्या का पूर्णरूपेण ज्ञान हो जाने के बाद क्रियात्मक अनुसंधान की प्रणाली में दूसरा महत्वपूर्ण सोपान समस्या को परिभाषित करना तथा उसका सीमांकन करना होता है।

परिभाषीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत समस्या के प्रत्येक पहलु को स्पष्ट तथा निश्चित कर दिया जाता है।

3. समस्या के मूल कारणो का विश्लेषण :-

इसमें सम्बन्धित सम्भावित कारणो का पता लगाया जाता है। सम्बन्धित तथ्यों को एकत्र करके सूची बना के उसका विश्लेषण कर पता लगाना चाहिए कि उसमें से कौन से कारण उचित है और प्रभावकारी है।

कारणो का विश्लेषण कर यह देखना चाहिए कि जिस कारण समस्या से जोड़ा गया है, उसका समस्या से तर्कयुक्त सम्बन्ध है। वह वास्तविक हो और उसका मूल स्त्रोत ज्ञात हो, अर्थात ज्ञात किया जा सके।

4. क्रियात्मक अनुसंधान का निर्माण :-

समस्या के कारणो का विश्लेषण करके अनुसंधानकर्ता को यह सोचना होता है कि समस्याओं का समाधान किन-किन कारको के द्वारा किया जा सकता है। वैज्ञानिक भाषा में इसे क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण कहते है।

5. क्रियात्मक उपकल्पनाओं का परीक्षण :- निश्चित योजना अनुसार क्रियात्मक उपकल्पनाओं का परीक्षण विधियो जैसे

1. निरीक्षण

2. सम्मति जानना
3. प्रश्नावलियों का प्रयोग
4. साक्षात्कार
5. चेक लिस्ट या अन्य सांख्यिकी विधियों का प्रयोग करके आकड़े एकत्र कर इसका अंकन एवं व्यवस्थापन किया जाता है।

7. निष्कर्ष प्रतिपादन :-

इसके अन्तर्गत निर्णय निकाला जाता है कि अनुसंधान करने वाला व्यक्ति पता लगाता है कि कौन सी उपकल्पना सबसे अधिक सहायक हुई और कौन सी अपेक्षाकृत कम।

इन निष्कर्षों के आधार पर नियमों का निर्माण किया जाता है जोकि हमारे कार्य प्रणाली में सुधार का एक प्रयास होता है।

4. विद्यालय कक्षा से विद्यार्थियों के भाग जाने के सम्बन्ध में दण्डित करना और अन्य अध्यापक से बात कर कारण का हल निकालने पर विद्यार्थियों को कक्षा से भागने से रोका जा सके।

उपकल्पना — यदि अभिभावक का ध्यान इस ओर दिलाया जाये तथा छात्रों को रोचक शिक्षण विधि से पढाया जाये तथा उनको प्रकरण सम्बंधी तथ्य पर व्याख्यान दिया जाये तो समस्या हल हो सकती है।

कार्य संग्रह विधि :-

1. प्रश्नावली
2. अभिरुचि परीक्षा
3. छात्रों एवं अभिभावकों से अलग-2 साक्षात्कार
4. निरीक्षण
5. अध्ययन

योजनाओ को कार्यान्वित करना →

11 मार्च से 23 मार्च

क्र०स०	विवरण	अवधि
1.	प्रश्नावली	मार्च द्वितीय सप्ताह
2.	उत्तरो का संकलन	मार्च द्वितीय सप्ताह
3.	अभिरुचि परीक्षा	मार्च द्वितीय सप्ताह
4.	साक्षात्कार	मार्च द्वितीय सप्ताह

परिणामों की व्याख्या एवं निष्कर्ष :- योजनाओं का क्रियान्वयन किये जाने के फलस्वरूप परिणामो के निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले।

1. गृह कार्य करके न आने वाले छात्रो को विषय वस्तु समझ में न आना
2. अनावश्यक बोझिल गृह कार्य देना।
3. नीरस वातावरण का होना
4. शिक्षक द्वारा छात्रों को अनावश्यक पीटना
5. अभिभावको का ध्यान न देना
6. रोचक शिक्षण विधियो का आभाव
7. शिक्षक द्वारा ठीक से न पढाया जाना।
8. विज्ञान की प्रयोगात्मक कक्षाएं न होना।

साधनों का परिचय :-

क्रियात्मक अनुसंधान में समस्याओं के समाधान हेतु आयोग के परिचय स्वरूप कुछ मुख्य कार्य दिये गये है।

1. योजना के परिणामों की सूचना छात्रों के अभिभावक को दी गयी
2. शिक्षक द्वारा शिक्षण विधि में परिवर्तन किया गया।
3. विद्यालय अनुसंधान पर विशेष रूप से ध्यान देने जाने लगा।
4. पाठ्य सामग्री क्रियाओं का अयोजन हुआ।

अन्य शिक्षको को जो इन छात्रो को पढाते है उनके इन निष्कर्षो से अवगत कराके इन समस्या को दूर करने का प्रयास करना।

इन सब उपायो एंव परिणामों के प्रयोग स्वरूप अब कक्षा में गृह कार्य पूरा न करके आने और अनुपस्थित होने वाले बच्चो की संख्या में कमी आयी।

क्रियात्मक रूपरेखा

स	दिनाँक	आरम्भ की गयी क्रियाएँ	विधि	अपेक्षित साधन
		विद्यार्थियों की रुचियों, अभिवृत्तियों, तथा दृष्टिकोण का ज्ञान प्राप्त करना।	स्वयं प्रयास करके एवं अन्य अध्यापक के सहयोग द्वारा	निरीक्षण एवं अध्ययन द्वार
		छात्रों की रुचियों मनोवृत्तियों एवं व्यक्तिगत दृष्टिकोण के विषय में जानना	स्वयं प्रयास द्वार	अध्ययन
		यह निश्चित करना कि एक दिन में कितने छात्रों का निरीक्षण किया गया	स्वयं विचार द्वार	अध्ययन
		यह निश्चित करना कि छात्रों के विषय वस्तु के प्रति कैसे रुचि बढायी जाये	छात्रों को पढाने वाले सभी शिक्षकों से बातचीत करके	अध्ययन
		छात्रों का कक्षा में रुचि न लेने की समस्या को अच्छी तरह समझना	सभी शिक्षकों से बातचीत करके	अध्ययन
		विद्यार्थियों से अभ्यास पुस्तिकाएं निश्चित रूप से लेना	साथियों के सहयोग से	अध्ययन
		अभिरुचियों का परीक्षण करना	प्रयोगात्मक क्रियाविधि	विज्ञान विषय के प्रयोगात्मक उपकरण
		अभिरुचियों का परीक्षण करना	प्रयोगात्मक क्रिया विधि	विज्ञान विषय के प्रयोगात्मक उपकरण
		विद्यार्थी की प्रगति मालूम करना	साथियों के सहयोग से	साक्षात्कार
		कक्षा में विषय वस्तु में रुचि न लेने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करना	स्वयं प्रयास करे	निरीक्षण

अनुसंधानकर्ता की टिप्पणी :-

योजना से सम्बन्धित सभी क्रियाओं का विस्तृत लेखा तैयार किया जाएगा। यदि परिकल्पना स्वीकृत की जाती है तो निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि यदि प्रधानाचार्य एवं शिक्षक विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने में सहयोग करे तथा अपने कार्य के प्रति निष्ठा का भाव रखे तो विद्यालय की कार्य-प्रणाली मे अपेक्षित सुधार एवं परिवर्तन लाया जा सकता है।

कक्षा 8 के छात्रो की सूची

क्रमांक	छात्रो के नाम
1.	पंकज सिंह
2.	मोनु
3.	आशीष
4.	जयचंद
5.	संजय
6.	समीट
7.	इरफान
8.	मो० शमीम
9.	शैखट
10.	महेन्द्र
11.	अमन
12.	प्रदीप
13.	शुक्लावती
14.	ज्योति
15.	महिमा
16.	शर्मिला
17.	किरन
18.	शालू
19.	सुरेश
20.	मोहन
21.	पूजा
22.	राकेश

22. राकेश
23. मो० अली
24. अलीउल्लाह
25. पूजा चावला
26. राम कुमार
27. धीरज
28. शेरमोहम्मद
29. खीन्द्र
30. सुनन्दा

परिणामों की व्याख्या एवं निष्कर्ष

क्रियात्मक अनुसंधान की रूपरेखा के अनुसार कार्य करते समय प्राप्त किये गये परिणामों के आधार पर परिकल्पना के मूल्यांकन से पता चला है कि क्रियात्मक अनुसंधान करने से पहले 30 छात्रों में से 10 छात्र जीव विज्ञान की कक्षा में गृह-कार्य पूरा करके नही आते है लेकिन विभिन्न उपायो के फलस्वरूप देखा गया है कि छात्रों की संख्या 3 रह गई। इसी प्रकार छात्रो अगर छात्रो के विभिन्न प्रगति तथा अन्य उपायो पर ध्यान दिया जाये तो जीव विज्ञान की कक्षा में गृह कार्य पूरा न करके आने वाले छात्रों की संख्या में लगातार कमी आयेगी यदि प्रणाली में गुणात्मक सुधार किया जायेगा।

संदर्भ ग्रंथो की सूची

क्र.सं.			
1.	डा० पाण्डेय के.पी.	–	शैक्षिक अनुसंधान विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 1988
2.	त्रिपाठी लाल वचन	–	मनोविज्ञान अनुसंधान पद्धति हरिप्रसाद भारगो 04/230 कचहरी घाट, आगरा 1988
3.	मदन वर्मा एम.	–	इंण्टरोडक्सन एण्ड साइकालोजी कल. रिसर्च एशिया प० हाउस 1965
4.	पाण्डेय के. पी.	–	शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी — अमित प्रकाशन मेरठ 1965
5.	कपिल एच. के	–	अनुसंधान विधियां (व्यवहारिक विज्ञानो में) 04/230 कचहरी घाट आगरा
6.	शर्मा आर. के. एस	–	शिक्षा तकनीकी — रोयल बुकडिपो मेरठ
7.	पाण्डेय के. पी एवं पाण्डेय	–	शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान – विनो पुस्तक मंदिर आगरा
8.	भरतद्वाज अमिता	–	शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान – विनो पुस्तक मंदिर आगरा
9.	भटनागर सुरेश	–	शिक्षा मनोविज्ञान — लॉयल बुकडिपो मेरठ
10.	लाल रमन बिहारी	–	शिक्षण कला एवं तकनीकी – रसतोगी पब्लिकेशन मेरठ
11.	भारगो महेश	–	आधुनिक मनोविज्ञान — परीक्षण एवं मापन - हरि प्रसाद भारगो 04/230 कचहरी घाट आगरा
12.	शर्मा आर. ए.	–	शिक्षा तकनीकी — लॉयल बुकडिपो मेरठ
13.	सिंह आर. डी.	–	शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान, – शोध प्रतिवेदन तृतीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम दिनॉक 11/09/200[illegible] शिक्षा विभाग विश्वविद्यालय गोरखपुर